गंदी बस्तिया

प्रस्तावना– गंदी बस्तियां औद्योगिकता का फलन है जो कई सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को जन्म देती हैं। यहां पर मूलभूत आवश्यकताएं जैसे – पानी, विद्युत, जल निकासी, स्वच्छ वातावरण, सड़के आदि सुविधाओं का अभाव होता हैं। भारत में औद्योगिक क्रांति की लहर काफी देर से आई और आज भी विश्व के अन्य देशो की तुलना में काफी कम हैं, फिर भी भारत इस समस्या से अछूता नहीं रहा हैं। भारत के महानगरों जैसे– बम्बई, दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता में उद्योगों का तेजी से विकास होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या इन औद्योगिक नगरों की ओर प्रवासित होती हैं। प्रवासित जनसंख्या मुख्यतः प्रतिकूल तत्व जैसे– गरीबी, बेकारी, कम मजदूरी, छोटी तथा अनार्थिक जोत, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी आदि तथा अनुकूल तत्व जैसे रोजगार की सुविधा, ऊंची दर, मजदूरी के निश्चित घंटे, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन आदि के कारण शहरों की ओर केन्द्रित होने लगती हैं।

उपरोक्त जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, अपराध वृद्धि एवं समाज में व्याप्त विषमता ही झुग्गी–झोपड़ियों का मूल कारण हैं, भोजन, वस्त्र एवं आवास का अभाव ही इन झोपड़–पट्टियों का मूल कारण हैं। झुग्गी–झोपड़ियां भारत के हर गांव में और महानगरों के हर कोने में विद्यमान हैं। महानगर बम्बई, कोलकाता में ही कुल जनसंख्या की आधी लगभग आधी आबादी झोपड़–पट्टियों में तथा फुटपाथ और गलियों में रहती हैं। ब्रिटिश श्रमिक संघ कांग्रेस का एक विशिष्ट मंडल 1928 में भारत आया था जिससे भारतीय श्रमिकों की आवास व्यवस्था पर जो टिप्पणियां की हैं उन्ही के शब्दों में –''हम जहां कहीं भी ठहरे, वहां श्रमिकों के निवास स्थानों को देखने के लिए गए और यदि हमने उन्हें नही देखा होता तो हमें इस बात का कभी विश्वास नहीं हो सकता था कि इतने खराब दशा के भी मकान हो सकते हैं। मकानों की यही दशा गंदी बस्तियों का मूल कारण हैं देश में नगरीकरण एवं औद्योगीकरण की प्रक्रिया अत्यंत ही तीव्र है। भारत कृषि प्रधान देश होते हुए भी भारत में कृषि व्यवसाय पर आश्रितों की संख्या में निरंतर कमी आती जा रही हैं और व्यवसाय पर आश्रित रहने वाले व्यक्तियों की संख्या में निरंतर वृद्धि होती जा रही हैं।

इस तरह शहरों में जो उद्योग स्थापित होते हैं वे ग्रामीण जनसंख्या को प्रवासित करने लिए आकर्षित करती हैं। यह प्रवासित जनसंख्या औद्योगिक क्षेत्रों के आस–पास काफी घनत्व में केन्द्रित हो जाती है और गंदी बस्ती का निर्माण हो जाता हैं। गंदी बस्तियों को अलग–अलग नाम से पुकारा जाता हैं जैसे बम्बई में चाल तमिलनाडु में चेरी, कोलकाता में बस्ती एवं कानपुर में अहाता । समय–समय पर श्रम समितियों व अन्य विवेकशील व्यक्तियों ने यह सुझाव दिया है कि इन गंदी बस्तियों को समाप्त कर दिया जायें।

गंदी बस्तियों की पहचान, अर्थ एवं परिभाषा :– गंदी बस्तियों (झुग्गी–झोपड़ियों) की परिभाषा नपे तुले शब्दों में तो नहीं किन्तु इस तरह से गंदी बस्ती की विशेषताओं को बताया जा सकता है–निम्न आय वर्ग जिन खराब दशाओं में रहते है वे हमें अच्छी तरह से मालूम हैं। इनके भीड़–भाड़ युक्त क्वार्टर या झोपड़ियां जो गंदी बस्तियों के नाम से जाने जाते है देश के लगभग सभी औद्योगिक नगरों में देखने में आते है ये क्षेत्र अस्थिर निर्माण, म्यूनिसिपल सेवाओं की कमी के कारण मानवीय निवास के अयोग्य है ऐसे क्षेत्र या मोहल्ले को गंदी बस्ती या झुग्गी–झोपड़ी कहते हैं।

परिभाषाः–

आर. के. डिकिन्सन के अनुसार– ''स्लम'' नगर के उस भाग को कहते है जहां पर मकान रहने योग्य न हों, और जहां का वातावरण नागरिकों के स्वास्थ्य एवं उनकी नैतिकता के लिए हानिकारक सिद्ध हों। यह वह घना बसा हुआ क्षेत्र है, जहां भूमि मूल्य गिरा हो, जहां निवासियों के आर्थिक स्तर निम्न हों, जहां अपराध का आधिक्य, मृत्यु एवं बीमारियों का उच्च दर हों, वहां पर निवास करने वाले व्यक्ति अशिक्षित, निर्धन, अस्वस्थ्य और अधिकांश प्रवासी होते हैं।

बर्गेल के अनुसार– ''गंदी बस्तियां शहर के वे क्षेत्र होते है, जिनमें निम्न स्तर की आवास दशा होती है। केन्द्र सरकार द्वारा 1956 में बनाए गए गंदी बस्ती अधिनियम (Slum Area Act,1956) में गंदी बस्ती की परिभाषा इस प्रकार से दी गई है– ''गंदी बस्ती प्रमुख रुप से एक ऐसा निवासीय क्षेत्र है,जहां निवास स्थान नष्ट हो गयें हों एवं अत्यधिक भीड़–भाड़ युक्त हों।

झुग्गी–झोपड़ियों के उदय के कारणः– झुग्गी–झोपड़ियों के उदय के प्रमुख कारणों को अनेक भागों में विभक्त कर अध्ययन किया जा सकता हैं। गंदी बस्तियों की उत्पत्ति के संबंध में निष्चित तौर पर कुछ कह पाना अत्यंत कठिन है। गंदी बस्तियों की समस्या वर्तमान युग में किसी एक राज्य या देष की ही समस्या नहीं, वरन यह विष्व स्तर की समस्या बन चुकी है। सुधा कालदाते ने गंदी बस्तियों के उत्पत्ति एवं विकास के लिए औद्योगीकरण को उत्तरदायी माना है । **The slum is refered to as the product of industrial revolution.(kaldate 1965) झुग्गी–झोपड़ियों की उत्पत्ति एवं विकास के लिए प्रमुख कारक निम्नांकित है** –

1. औद्योगीकरण एवं नगरीकरण – औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण गंदी बस्तियों का जन्म हुआ है। उद्योगों में कार्य करने के लिए गांवों से आने वाले लागों को आवास उपलब्ध नहीं हो पाता, जिससे वे खाली पड़ी भूमि पर अधिकृत कब्जा कर कच्चे मकान बना लेते है। नगर के सीमावर्ती क्षेत्र एवं उद्योगों के निकट श्रमिकों द्वारा ऐसी गंदी बस्तियों का निर्माण किया जाता है।

2. शहर मे आवास की समस्याः– यह भी झुग्गी झोपड़ियों के उदय का मुख्य कारण है। शहरों में अधिक जनसंख्या होने के कारण तथा भूमि की सीमितता के कारण आवास की एक गंभीर समस्या रहती है जो झुग्गी झोपड़ियों का रुप धारण करती हैं।

3. ग्रामीण बेरोजगारी – वर्तमान समय में कृषि की ओर षिक्षित जनसंख्या का बिल्कुल भी आकर्षण नहीं है। सभी व्यक्ति नौकरी चाहते है। इसके अतिरिक्त गांवों में कृषि के अलावा अन्य रोजगारों का नितान्त अभाव है। 4–5 माह कृषि का कार्य समाप्त होने पर ग्रामीणों के समक्ष रोजगार की समस्या उत्पन्न हो जाती है, फिर रोजगार की तलाश में गांवों से नगरों की ओर प्रवास करते है, नगरों से गांवों की ओर आने वाले व्यक्ति आवास के रूप में झुग्गी–झोपड़ीयों का सहारा लेते है, इसके परिणामस्वरूप गंदी बस्तियों का विकास होता है।

4. जनसंख्या में वृद्विः– जनसंख्या में जितनी तीव्रता से वृद्वि होती जा रही है, उतनी तीव्र गति से आवासों का निर्माण नहीं होने से लोग भीड़–भाड़ युक्त मकानों में रहते है, फलस्वरूप गंदी बस्तियों में वृद्वि हुई है।

5. गांवो से शहरों की ओर रोजगार के लिए प्रवास :– भारत में अधिकांश जनसंख्या गांवो में निवास करती है तथा कृषि पर मुख्य रुप से प्राकृतिक कारणों जैसे वर्षा, जलवायु इत्यादि पर निर्भर करती है। कृषि क्षेत्र में ज्यादातर लोगों के लगे रहने से प्रति व्यक्ति आय उनकी बहुत कम है तथा कृषि भी एक निश्चित समय में की जा सकती है। बाकी ग्रामों में अन्य समय रोजगार की कोई अन्य सुविधा उपलब्ध नहीं है जिससे ग्रामीण को विवश होकर जीविकोपार्जन हेतु शहर की ओर प्रवास करना पड़ता हैं।

6. बीमारी सम्बन्धी कारण :– आर्थिक द्वष्टि से कमजोर लोगो को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसमें प्रमुखतः आय की कमी, आश्रितों की अधिकता, और अन्य कई सामाजिक समस्याएं है। कई रोग छुआछूत के भी होते है जैसे कुष्ठ रोग, तपेदिक आदि इन रोगो के कारणवश भी लोग शहर के बाहरी इलाकों या गंदे स्थानों में रहने को मजबूर हो जाते हैं।

7. प्राकृतिक विपत्ति :– जब कभी प्राकृतिक विपदाएं अर्थात अकाल, बाढ़, भूकंप, ज्वालामुखी, संक्रामक रोग आते है तो लोग अपने निवास स्थान को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले जाते है और वहां जनसंख्या की अधिकता के कारण गंदी बस्तियां विकसित होने लगती है।

8. नगरीय आकर्षण :– नगरों में मनोरंजन, चिकित्सा, पुलिस, बिजली, न्यायालय, षिक्षा आदि की सुविधाओं के कारण लोग आकर्षित होकर नगरों में निवास के उद्देष्य से आते है। उनके लिए मकानों का अभाव होता है, जिससे गंदी बस्तियों का निर्माण एवं प्रसार होने लगता है।

9. निम्न वर्गो की अधिकता :– निम्न वर्गो के लोग लम्बे समय से दयनीय दशा में रहने से जीवन के प्रति रूढ़िवादी हो जाते है और वे गंदी बस्तियों में रहते है।

10. सरकारी उदासीनता :– नगरों में गंदी बस्तियां प्रायः शासकीय रिक्त भूमि पर विकसित होती है। शुरू में ही प्रशासन इन बस्तियों के प्रति कठोर रूख अपनाती और एक औसत स्तर से बुरे मकानों को दबावपूर्वक गिरवा देती तो नगरों के कैंसर की भांति फैली ये गंदी बस्तियां आज विकसित नहीं हो पाती ।

11. गरीबी :– गंदी बस्तियों के निर्माण का प्रमुख कारण गरीबी है। लोगो के पास इतना सामर्थ्य नहीं होता है कि वे ऊंचे स्वास्थ्यप्रद एवं अच्छे मकानों को किरायें पर लेकर रह सके। परिणामस्वरूप सस्ते किराये अथवा स्वयं के मकानों में रहते है, जो गंदी बस्तियों में ही उपलब्ध होते है।

12. राजनैतिक कारण :– विभिन्न राजनैतिक दलों के संरक्षण के कारण शहर के रिक्त शासकीय भूमि पर अवैध कब्जा के द्वारा गंदी बस्तियां विकसित हो जाती है।

13. गंदी बस्तियों में कार्यरत महिला श्रमिकः– देश की कुल महिला श्रम शक्ति में अधिकांश महिलाएं झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाली कार्यरत महिलायें होती हैं। जो छोटे–छोटे कार्यो में लगी होती हैं।

14. अन्य कारण :– गंदी बस्तियों की उत्पत्ति एवं विकास के लिए उत्तरदायी उपरोक्त कारकों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारकों का गंदी बस्तियों के विकास मे महत्वपूर्ण रूप से योगदान होता है इनमें से परिवारिक कलह, सामाजिक बहिष्कार, रीति–रिवाज, रूढ़िवादिता, अत्याचार, अंध–विष्वास आदि प्रमुख कारण है, जो गंदी बस्तियों की उत्पत्ति एवं विकास में महत्तवपूर्ण योगदान देते है।

<u>गंदी बस्तियों की विशेषताएं :–</u> गंदी बस्तियों में कुछ विशिष्ट विशेषताएं होती है, जिससे ये क्षेत्र नगर में स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते है। इस प्रकार नगर की विशिष्टि संरचना वाले इन गंदी बस्तियों में मुख्य रूप से निम्नांकित विशेषताएं पाई जाती है –

1. गरीबी – गरीबी के कारण गंदी बस्ती के निवासी नगर के सुविधायुक्त मकानों का किराया देने में असमर्थ होते है। अतः शासकीय अथवा निजी रिक्त भूमि पर आवास निर्मित कर निवास करते है, इस प्रकार गरीबी इन बस्तियों की सबसे महत्तवपूर्ण विशेषता है।

2. सामाजिक सेवाओं की अपर्याप्तता – गंदी बस्तियों में उपलब्ध बुनियादी सुविधाएं अपर्याप्त होती है। यहां सफाई का अभाव होता है; जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव यहां के निवासियों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। इसके साथ ही शुद्व पेयजल, बिजली, शौचालय, मार्ग तथा अन्य स्वास्थ्य सेवाओं का समुचित उपलब्धता नहीं पाई जाती है।

3. भीड़–भाड़ – इन बस्तियों में जनसंख्या की अधिकता के कारण भीड़–भाड़ अधिक होती है।

4. पर्यावरण प्रदूषण – इन बस्तियों में जल, मल निकासी एवं कचरा फेंकने की उचित व्यवस्था नहीं होती, अतः गंदगी एवं दुर्गंध के कारण इन क्षेत्रों में पर्यावरण प्रदूषण पाया जाता है।

5. निम्न नैतिकता – गंदी बस्तियों के निवासियों में नैतिकता की कमी पाई जाती है। यहां के अधिकांश व्यक्तियों में नशा, जुआ, बाल–अपराध, यौन–अपराध आदि की प्रवृत्ति पाई जाती है।

6. पृथकता – गंदी बस्तियों में निम्न आय वाले लोग निवास करते है, उनका नैतिक स्तर निम्न होता है, सामाजिक प्रतिष्ठा निम्न होती है, जिससे वे समाज से पृथक रहना चाहते है।

7. अंधविश्वास एवं अशिक्षा – गंदी बस्तियों में शिक्षा का स्तर निम्न होता है। शिक्षा की कमी के कारण सामान्यतः यहां के निवासी अंधविश्वासी एवं रूढ़िवादी होते है।

8. गंदगी एवं बीमारीयां – सफाई की कमी यहां के निवासियों की अज्ञानता के फलस्वरूप इन बस्तियों में गंदगी एवं बिमारियों की बहुलता पाई जाती है। निम्न आर्थिक स्थिति एवं स्थानाभाव के कारण गंदी बस्तियों के मकानों में निजी शौचालय का अभाव पाया जाता है। शौचालय की सुविधा के अभाव में यहां के निवासी खुले मैदान, गढ्ढ़ों, मार्ग के किनारे एवं नालियों का उपयोग शौच स्थल के रूप में करते है, जिससे यहां का वातावरण निरंतर प्रदूषित होने लगता है।

9. असामाजिक तत्वों का आश्रय–स्थल – नगर के अधिकाषं अपराधिक एवं असामाजिक प्रवृत्ति के लोग प्रायः गंदी बस्तियों में निवास करते है। गंदे वातावरण में निवास करने के कारण लोगो की मनोवृत्ति अपराधी बन जाती है और उनका नैतिक पतन हो जाता है। बाल अपराध, यौन अपराध, चोरी, नशाखोरी आदि सामाजिक बुराईयों की इन क्षेत्रों में अधिकता पाई जाती है।

10. निम्न आवासीय दशा – गंदी बस्तियों में निर्मित मकान प्रायः मिट्टी एवं ऐसे पदार्थ से बनाए जाते है। जिसे आंधी, तूफान, तेजवर्षा व अन्य प्राकृतिक विपत्ति के समय सुरक्षित रखना कठिन होता है।

11. नियोजित मार्ग का अभाव – गंदी बस्तियों के मार्ग नियोजित नहीं होते है। अतः उनकी चौड़ाई पर्याप्त नहीं होती है। संकरी गलियों की अधिकता पाई जाती है।संकरी गलियां, अनियोजित मकान भी अपराधियों को संरक्षित करते है। निर्धनता के कारण पारिवारिक नियंत्रण के अभाव में भी बाल अपराध को प्रोत्साहन मिलता है, जो समाज एवं देश के लिए गंभीर समस्या है।

12. स्थिरता– गंदी बस्तियों की प्रमुख विशेषता उनकी स्थिरता भी है। एक स्थान से हटाए जाने पर दूसरे स्थान बस जाते है।

<u>गंदी बस्तियों के प्रभावः</u> – गंदी बस्तियां केवल दूषित वातावरण से ही युक्त नहीं होती परंतु इनका प्रभाव व्यक्ति, उसके परिवार एवं बच्चों पर अत्यधिक पड़ता है।

डॉ.डी.एच.मेहता – गंदी बस्तियों के निवासी अनेक प्रकार की भौतिक, मानसिक और सामाजिक त्रुटियों के शिकार होते और उनका मस्तिष्क चिन्ता और असुरक्षा से भयभीत रहता है। इनका वातावरण समाज विरोधी व्यवहारों को प्रोत्साहन देता है। गंदी बस्तियों के प्रमुख परिणाम निम्नांकित है :–

1. ये क्षेत्र स्वास्थ्य की द्वष्टि से बड़े हानिकारक होते है। अस्वस्थ्य एवं दूषित वातावरण के कारण यहां अनेक प्रकार की बिमारियां फेलती है और मृत्यु दर अत्यधिक होती है।

2. डॉ.मेहता ने वेश्यावृत्ति, जुआखोरी, गिरोह बन्दी, स्मगलिंग, पतित और शिक्षित यौवन प्रयास एवं परिश्रम की अकुशलता आदि जैसे अपराधों को गंदी बस्तियों का लक्षण माना है।

3. मनोवैज्ञानिक द्वष्टि से गंदी बस्तियों के मस्तिष्क में इनमें रहने की मानसिक अवस्था पैदा कर देती है। इससे वे निष्क्रिय हो जाते है। उनकी कार्य करने की इच्छा समाप्त हो जाती है। उनके मन में जीवन के प्रति भय भरा रहता है और हीनता और बुदजिली पैदा हो जाती है।

4. गंदी बस्तियां मानवीय गुणों, क्षमताओं तथा योग्यताओं का विनाश करती है और इस प्रकार सुयोग्य नारी की राष्ट्र में कमी होती रहती है।

5. इन बस्तियों का वातावरण वैयक्तिक और पारिवारिक अस्थिरता को जन्म देने वाला होता है क्यों कि लोगों को सफाई आदि के प्रति कोई लगाव नहीं रहता है।

6. गंदी बस्तियां बाल–अपराधों को प्रोत्साहन देता है। बच्चे अपने बड़ों को अनुचित भौतिक और समाज विरोधी व्यवहार करते हुए देखते है। अतः इनका गन्दा वातावरण बच्चों में समाज विरोधी व्यवहार और अनुषासनहीनता फैलाने में बहुत सहायक है।

निष्कर्ष- जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, अपराध वृद्धि एवं समाज में व्याप्त विषमता ही झुग्गी–झोपड़ियों का मूल कारण हैं, भोजन, वस्त्र एवं आवास का अभाव ही इन झोपड़–पट्टियों का मूल कारण हैं।

अत: इनके विकास के लिए योजनाबद्ध तरीके से सभी कारकों का विकास कर ही भारत में गंदी बस्तियों की समस्या का निदान किया जा सकता हैं।

संदर्भ-

1. आर. एन. श्रीवास्तव- विकासात्मक मानवविज्ञान
2. गूगल मुक्त ज्ञान
3. विकिपीडिया